

प्रतिमानाटकम् का नाट्य शास्त्रीय अध्ययन

दीप्ती

असिस्टेंट प्रोफेसर

संस्कृत विभाग,

मान्यवर कांशीराम राजकीय

महाविद्यालय निनौआ,

फर्रुखाबाद

शोध सारांश :

संस्कृत समस्त लोक की प्राचीनतम भाषा है। भारतीय ऋषियों, मनीषियों एवं विद्वानों का समस्त चिन्तन, मनन गवेषण और विश्लेषण संस्कृत भाषा में ही है। भारत के साहित्यिक, सांस्कृतिक, धार्मिक, आध्यात्मिक, नैतिक, राजनैतिक और ऐतिहासिक जीवन की व्यवस्था भी इसी भाषा में प्राप्त होती है। यह ग्रीक लेटिक, जर्मन इत्यादि अनेक भारोपीय परिवार की भाषा की जननी है। संस्कृत साहित्य का विश्व वाङ्मय में अद्वितीय व गौरवपूर्ण स्थान है। यह साहित्य भारतीय (संस्कृति) की अमूल्य निधि है। व इस देश की संस्कृति की प्रधान वाहन रहा है। संस्कृत के काव्य एवं नाटक भारतीय संस्कृति की क्रीडास्थली है। संस्कृत साहित्य अत्यधिक व्यापक व सर्वांगपूर्ण है मानव के चार पुरुषार्थ हैं— धर्म, अर्थ, काम एवं मोक्ष इन चारों पुरुषार्थों की सम्यक् विवेचना से संस्कृत साहित्य का विशाल भण्डार भरा पड़ा है।

नाटक का महत्व :

संस्कृत साहित्य में नाटकों का मूर्धन्य स्थान रहा है। वस्तुतः संस्कृत के काव्यशास्त्रियों ने काव्य को दो रूपों में स्वीकार किया गया है।

1. दृश्य काव्य

2. श्रव्य काव्य

दृश्यश्रव्यत्वभेदेन पुनः काव्यं द्विधामतम्।

दृश्यं तत्राभिनेय तद्रूपारोपान्तु रूपकम्॥

साहित्य दर्पण 6 परिच्छेद 2

नाटक को सामान्यतः दृश्य काव्य तथा रूपक के नाम से पुकारते हैं। दृश्य काव्य से तात्पर्य उस काव्य से है, जो नेत्रों के द्वारा हमारे हृदय में प्रवेश किये जाने पर ही वह आनन्द प्रदान करता है। श्रव्य काव्य सुनने योग्य होता है। श्रव्य काव्य की अपेक्षा दृश्य काव्य अधिक रमणीय है। नाटक का उद्देश्य अत्यन्त महत्वशाली है। भरत मुनियों ने नाट्य को सार्ववर्णिक वेद कहा है, क्योंकि अन्य वेद केवल दूजमात्र के लिए उपयोगी तथा उपादेय होते हैं, परन्तु नाट्य का उपयोग प्रत्येक वर्ण के लिए है। नाटक का प्रभाव किसी एक प्रकार की अभिरुचि वाले लोगों के ऊपर नहीं होता, प्रत्युत यह सार्वजनिक मनोरंजन के लिए होने के कारण समाज के लिए प्रत्येक व्यक्ति के लिए ग्राह्य तथा उपादेय होता है। नाटक का विषय भी सीमित नहीं होता, प्रत्युत तीनों लोकों के भावों का अनुकीर्तन इसमें रहता है। व्यवस्था का अनुकरण नाट्य कहलाता है धनञ्जय ने अपने 'दशरूपक' में इसी भाव को ही वर्णित किया है।

संस्कृत नाट्योत्पत्ति के बारे में भारतीय परम्परा दैवी उत्पत्ति स्वीकार करती है। भारतीय परम्परा के अनुसार नाट्य वेद की सृष्टि ब्रह्मा ने की तथा उसका भू-लोक पर प्रचार-प्रसार भरतमुनि ने किया। भरतमुनि अपने नाट्यशास्त्र के प्रारम्भ में लिखा है कि त्रेतायुग में देवता ब्रह्मा के पास गये और उनसे उन्हें मनोरंजन का कोई साधन प्रदान की प्रार्थना की। तब ब्रह्मा जी ने ऋग्वेद से पाठ्य सामवेद से संगीत, यजुर्वेद से अभिनय तथा अथर्ववेद से रस तत्व लेकर पंचम वेद नाट्यवेद की रचना की।

जग्रात पाठ्यमृगवेदात् सामभ्योगीतमेव च,

यजुर्वेदादभिनयान् रसानाथर्वणादपि।

वेदोपवेदः सम्बद्धो नाट्यवेदो महात्मना।

एवं भगवता सृष्टो ब्रह्मणा सर्ववेदना।।

तथा तस्मात्सृजापरं वेदं पंचम सार्ववार्णिकम्।

नाट्यशास्त्र 1.1

परन्तु पाश्चात्य विद्वान नाट्य उत्पत्ति के सम्बन्ध में समाज एवं प्रकृति के परिवर्तन के आधार पर भिन्न-भिन्न सिद्धान्त मानते हैं। सिल्वॉ लेवी, प्रो० फॉन और डॉ० हर्टल ऋक् संवाद- सूक्तवाद से प्रो० रिजवी वीर पूजा से डॉ० पिशेल भारतीय नाटकों में 'सूत्रधार' शब्द के प्रयोग के आधार पर उसका अर्थ डोरी पकड़कर पुत्तली नचाने वाला व्यक्ति समझते हुए पुत्तलिका नृज्य से प्रो० हिलब्राण्ड और स्टेकोनो लोकप्रिय स्वांगों से डॉ० ल्यूड, डॉ० कोनो आदि छाया नाटकों से प्रो० वेब और प्रो० विन्डिश यूनान से मानते हैं।

अतः संस्कृत साहित्य में नाटकों का स्थान विशिष्ट रहा है, यह तथ्य निम्न उक्ति से पूर्ण रूपेण समर्थित है-

कालिदास के 'काव्येषु नाटकं रम्यम्' नाट्य कला का विकास वैदिक युग रामायण, महाभारत, पतंजलि, पाणिनी, वत्स के काल-क्रम से गुजरता हुआ भास कालिदास व भवभूति के समय चरमोत्कर्ष पर पहुँच गया।

प्रायः सभी नाटकों के कथानक पौराणिक ऐतिहासिक तथा कुछ कल्पित भी हैं। इसी प्रकार इन नाटकों के नायक भी इतिहास प्रसिद्ध हैं। नाटकों के कथानक में विभिन्न महापुरुषों, राजाओं और दैवी शक्तियों का चित्रण है। जो समाज के आदर्श पुरुष हैं। उनका सजीव, रोचक और सरस वर्णन है। महाकवि भास का व्यक्तित्व एवं कृतित्व भारतीय विद्वान् लेखकों, कवियों तथा नाटककारों में यह विशेषता रही है कि उन्होंने अपनी कृतियों में कहीं पर भी अपना कोई परिचय, समय आदि का उल्लेख नहीं किया।

कालिदास भवभूति प्रभृति कवियों के समान नाटककार भास ने भी अपनी रचनाओं में अपने जन्म स्थान एवं अपनी तिथि के सम्बन्ध में कुछ नहीं लिखा। भास के समय निर्धारण में अभी तक विद्वानों में मतभेद है। गणपति शास्त्री ने भास का समय ई०पू० छठी शती से चौथी शताब्दी माना तो अन्य विद्वान् विण्टरनिज ने भास का समय ई०पू० चतुर्थ शती माना। अतः अन्तः साक्ष्य एवं बहिः साक्ष्य के आधार पर भास को चतुर्थ ई०पू० तथा ईस्वी सन् चतुर्थ शतक के बीच स्वीकार किया जा सकता है। भास के जिस तरह

समय निर्धारण में विद्वानों के मतभेद थे उसी तरह जन्म स्थान में भी विद्वानों में मतभेद हैं। कोई उनका जन्म स्थान दक्षिण भारत मानते हैं तो कोई उनका जन्म स्थान उज्जयिनी मानते हैं। तो कोई मगध जनपद के आस-पास प्रदेश होना चाहिए ऐसी सम्भावना करते हैं। अतः भास के रूपकों के अध्ययन से इतना तो स्पष्ट है कि भास उत्तर भारत के निवासी थे। उज्जयिनी और मगध से उनका घनिष्ठ सम्बन्ध। लेकिन उज्जयिनी ही भास की जन्म भूमि है। एकदन्त कथा में बताया गया है कि वे जाति के धोबी थे। इस प्रकार आभ्यान्तर प्रमाणों से सिद्ध होता है कि नाटककार भास धर्म-भीरु ब्राह्मण थे और वे किसी राजा की राज्यसभा में राजकवि के पद पर प्रतिष्ठित थे। ब्राह्मण धर्म और वैदिक संस्कृति के प्रति उनकी अपार निष्ठा थी। भास द्वारा रचित इस समय 13 नाटक उपलब्ध होते हैं।

प्रतिमानाटकम् की कथावस्तु – यह सात अंकों का नाटक है जो भास के नाटकों में सर्वोत्तम है। इसमें रामायण की कथा संक्षेप में वर्णित है। राम के युवराज पद पर अभिषेक से प्रारम्भ करके रावण वध तथा वन से लौटकर राज्याभिषेक तक की कथा इसमें प्रस्तुत की गई है। इक्ष्वाकुवंशीय मृत राजाओं की प्रतिमाएं देवकुल में रखे जाने की घटना को अत्यन्त महत्व और उसी आधार पर उसका नाम प्रतिमानाटकम् रखा और प्रतिमा दर्शन से ही भरत को दशरथ की मृत्यु का समाचार प्राप्त होता है।

प्रस्तुत नाटक के नायक राम हैं जो कि धीरोदात्त कोटि के नायक है। वे असाधारण व्यक्तित्व के धनी थे। धीरोदात्त नायक धीर, वीर, गम्भीर होने के साथ ही आत्म प्रशंसा रहित, अहंकार शून्य व दृढव्रत होता है। प्रतिमानाटकम् नाटक के नायक राम में ये सभी गुण विद्यमान थे। अतः वे धीरोदात्त कोटि के नायक है।

प्रस्तुत नाटक में करुण रस की प्रधानता है, जो नाटक के प्रारम्भ से अन्त तक प्रवाहित रहता है। अन्य रसों का अभाव ऐसा प्रतीत होता है।

सन्दर्भ ग्रन्थ :

1. संस्कृत साहित्य का इतिहास : बलदेव उपाध्याय
2. नाट्यशास्त्र : भरतमुनि
3. प्रतिमानाटकम् : जयकृष्णदास हरिदास गुप्ता
4. साहित्य दर्पणा : विश्वनाथ कविराम
5. संस्कृत साहित्य का इतिहास : रामचन्द्र शुक्ल
6. अभिनव नाट्यशास्त्र : पं० सीताराम चतुर्वेदी